मुसहरों में गरीबी एवं सामाजिक निरसन : एक समाजशास्त्रीय अध्ययनन

मैनेजर प्रसाद*

प्रस्तावना

भारतीय समाज की सामाजिक संरचना सम्बद्ध संस्थाओं का एक संगठन है। प्राचीन धर्मावद्ध संस्था के समन्वीकृत सांमञ्स्यीकृत प्रक्रिया के रुप में सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक, राजनैतिक क्रिया विधि आधार प्रतिमानों तथा मानव भावनाओं को गुणात्मक एवं मात्रात्मक स्तर पर जाति व्यवस्था ने भारतीय समाज को प्रभावित किया है। सामाजिक असमानता निश्चित नियम के आधार पर सामाजिक स्तरीकरण की जो जन्मना अथवा अनुवांशिक जातिगत संस्तरण पद्धति का विकास हुआ था वे हिन्दू समाज व्यवस्था को प्रमुख चार वर्णों में विभक्त करके उपेक्षाकृत एक बन्द समाज का संकुल स्परुप निर्माण किया था किन्तु वर्तमान समय में मात्र जाति रुप ने ही दृष्टिगोचर होता है।

भारतीय सामाजिक व्यवस्था के अन्त्यज दलित, पतित अस्पृश्य जो सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक रुप से पिछड़े हुए अनुसूचित जाति 'मुसहर' समाज के अत्यन्त न्यूनतम् बिन्दू में जीवन यापन कर रही है। भौतिक जगत शाश्वत् है। सत्य अनुभवातीत नहीं होता भौतिक उन्मुख मनोवृत्तियों की ओर से उन्मुख मनस आर्थिक जगत की उन्मुख संभावनाओं से इतना अभिभूत हुआ कि पश्चात्य जीवन व्यापक क्षेत्र में इस तरह नियंत्रित किया है कि वर्तमान परिवेश में जाति में अपेक्षित परिवर्तन यत्र–तत्र प्रदर्शित होता है। सम्प्रति समाज कि समकालीन संस्थागत प्रणालियां भारतीय सन्दर्भ में उद्यतन अति महत्वपूर्ण होते हुए भी परिवर्तन के हर प्रवेश को प्रत्येक क्षण उद्देलित करती है।

असमानता विश्व का सार्वभौमिक सतत् नियम है। असमानता से सम्पुष्ट भारतीय सामाजिक संरचनायें सोपानगत संस्तरण की शोधनीय प्रत्यय है।

संस्तरणात्मक व्यवस्था भारतीय सामाजिक जीवन की मेरूदण्ड है, जिसके आधार पर आज तक का जीवन इसी सोपान अभिक्रम में उत्थान–पतन की परिसीमा करते हुए आज सर्वव्याप्त है। संस्तरणात्मक व्यवस्था के आधार पर वर्णगत स्वरूप में विभक्त भारतीय जीवन में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शुद्र प्रकार्यात्मक व्यवस्था में पद एवं भूमिका का निर्वाह करते हुए आज तक सामाजिक व्यवस्था की गतिशीलता में योगदान देते रहे, इतिहास के अविरल पन्ने इस बात के साक्षी है कि पतित दलित अस्पृश्य आदि नामों से सम्बोधित चतुर्थ वर्ग के रूप में मान्य सामाजिक, आर्थिक व शैक्षिक रुप से दलित अभिव्यक्ति असमानता के अधम उदाहरण रहे हैं।[1] उनकी गरीबी उनके अभिक्रम पूंजी है, लेकिन जीवन स्तर की न्यूनतम स्तर में आज भारत की लगभग 24 प्रतिशत जनसंख्या रोटी की ओर लालायित सी दृष्टि से दृष्टिगोचर है।

जे0एच0 हट्टन, एम0के0 दत्ता, मैकिम मेरियट, एम0एन0 श्रीनिवास, आस्कर, एम0जी0 वेकी, आन्द्रे बेताई के सर्वोन्मुखी अध्ययनों से जाति के विस्तृत परिप्रेक्ष्य के विभिन्न आयामों का दर्शन हो जाता है। जाति मूलतः भारतीय मानस की अन्तरात्मा रही है यह वह धुरी रही है, जिसके चारों ओर सम्पूर्ण सामाजिक संस्थाएं, व्यवस्थाएं, संगठन आदि सक्रिय रुप से निरन्तर परिभ्रमण करते रहे हैं।[2]

जे0एच0 हट्टन के अध्ययनों से यह स्पष्ट हो चुका है कि उन समस्त जातियों की अध्ययन के लिए विशेषज्ञों की सेना की आवश्यकता है। अनुसूचित जाति मुसहर भारत वर्ष की अनुसचित जाति जनसंख्या का मात्र 0.3–0.4 प्रतिशत ही प्रतिनिधित्व करती है। स्वतन्त्रता के पूर्व यदि भारतीय सामाजिक व्यवस्था पर विहंगम दृष्टि डाली जाय तो महात्मा गाँधी का समझौता जो कि पूना एक्ट 1932 के नाम से उद्धत है दलित लोगों को हरिजन नाम से सम्बोधित किया गया। अन्तरिम सरकार के गठन के उपरान्त सन् 1937 में भरतीय जन प्रतिनिधियों ने सम्पूर्ण भारतीय सामाजिक व्यवस्था के अव्याप्त, पतित, दलित, अस्पृश्य एवं जो सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक रुप से पिछड़े हुए लोगों की सूची बनवायी जिसके अन्तर्गत आने वाली जातियों को अनुसूचित जाति से सम्बोधित किया गया। जंगलों में जीविका की जोह खोज में भटकने वाली यह जाति सामाजिक आर्थिक रूप से जीवन अत्यन्त न्यूनतम बिन्दू में जीवन यापन करने वाले समूह को अनुसूचित जनजाति के नाम से सम्बोधित किया गया। मूल रूप से मुसहर

* **शोध छात्र, समाजशास्त्र विभाग, दी0द0उ0 गो0 विश्वविद्यालय, गोरखपुर**

जाति भारतीय हिन्दू सामाजिक व्यवस्था के सम्पर्क में अति प्राचीन काल से ही रही है, इसलिए उन पर जंगलों में आवासित जनजातियों के समान, जादू, टोना, धार्मिक रूढ़ियां, संस्कृति का अलग–अलग अस्तित्व, उन्मुक्त वैचारिकीय जीविकोपार्जन के अलग–अलग उत्पादन की विधियां अंकिचन ही दृष्टिगत होती है। यह विभिन्न अनुसूचित जातियों के अति समरूप है। समरूपता एकता की जननी है। फलतः जिन धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक विडम्बनाओं और निर्योग्यताओं से अनुसूचित जातियां आक्रसन्त रही है। उन्हीं रूढ़िगत धार्मिक वाह्य आडम्बरों से मुसहर जाति भी आज तक उभर नहीं पायी है। जाति प्रथा जब अपनी यौनावस्था में थी तब से यह जाति वर्ग कई प्रकार की दासता से भी बुरी थी। दास केवल एक व्यक्ति के अधीन होता है लेकिन अछूतों के परिवार पर तो सम्पूर्ण गाँव की दासता का भार था[3], एक शुद्र चाहे वो क्रित हो या संक्रित दास कार्य के लिए विवश किया जा सकता है, क्योंकि स्वयं आस्तित्व मन में उसकी सृष्टि ब्राह्मण के दास होने के लिए ही है। ऐसा देखा गया है[4], कि शुद्र को उपनयन संस्कार, वेदाध्ययन तथा यज्ञ की अग्नि प्रज्वलित करने का अधिकार नहीं है।[5] गौतम ने यह व्यवस्था दी थी की वैदिक मन्त्रों को सुनने वाले शुद्र के कानों में तील या लाख का गला हुआ गरम पदार्थ भर देना चाहिए वैदिक मंत्रों का उच्चारण करने पर उसकी जिह्वा काट देने का निर्देश दिया गया था, उसके सामने वेद पाठ भी निषिद्ध कर दिया गया था[6], उन्हें केवल गाँव से ही पृथक नहीं किया गया था अपितु उनके लिए ऐसे कर्तव्यों तथा आवलाभों को निर्धारित कर दिया गया जिससे यह स्पष्ट रूप से प्रकट होता है कि वे मानवता के उद्यम उदाहरण थे[7]।

उपर्युक्त प्राचीन सन्दर्भ ग्रन्थीय अभिव्यक्तियों एवं ऐतिहासिक अध्ययनों से यह स्पष्ट है कि सामाजिक संरचना का आदिकालीन स्वरूप असमानता जन्मगत संस्तरण एवं जातियों के विशेषाधिकारों से गहवित रहा है। मूलतः मुसहर जैसा कि पूर्वोक्त कथनों से भी स्पष्ट है कि सम्पर्क सहयोग, सहलाकर आदि सामाजिक प्रक्रियाओं में उनकी जीवन विद्या को ही मोड़ सा डाला है। अपने धार्मिक रीतियों, विभिन्न विश्वासों, जीविकोपार्जन की नित्य नवीन उत्पादन की विधियों से पूर्णतः वे अपने को परिवर्तन की तोकरी विभिन्न अवधारणाओं से इस तरह घिरा हुआ पाते है कि मुसहर के सम्बन्ध में परिवर्तन की भौतिक घटनायें सामान्य रूप से परिचय करने लायक है।

खास तौर से ऐसे लोगों का अध्ययन जिनके काम में आने वाला अवधारणाओं का घेरा ईष्टजनों से सर्वथा अलग–अलग है। उनके काम में भाषाओं का स्वरूप सभ्य समाज की शुद्ध भाषा से मेल नहीं खाती, दोना, पत्तल, ककड़ी आदि आजीवन श्रमिक के रूप में ही जीविकोपार्जन के लिए जीते रहना उनकी आदत सी बन चुकी है। वस्तुतः भारत की आजादी भारत की आधुनिकीकरण के मुक मेंरूदण्ड रही है। स्वतन्त्र होना पाश्चात्य जीवन दर्शन से नहीं था, अपितु हमें स्वतन्त्र होना था भारत के जीवन की उत्थान की अद्वितीय कडी के रूप में भारतीय समुदाय के प्रत्येक पक्ष अपना स्पष्ट असर छोड़ चुकी थी इस परिवर्तन में मुसहर कैसे अछुता रह सकता था। जब हम आधुनिकीकरण की बात करते है, तो हमारा मूल अर्थ वैचारिकीय अभ्युन्नति से है, न कि इसका अर्थ हमने कितनी फैक्टरियाँ स्थापित की कितनी सड़के, नहर एवं बाँध बने, सच तो यह है कि आधुनिकीकरण की इस चकाचौध से दूर अपनी ही आर्थिक विडम्बनाओं से त्रस्त इस औद्योगीकरण एवं आधुनिकीकरण की प्रक्रिया से अंकिचन अछूते रहते हुए भी हम मुसहर समुदाय को परिवर्तन की उस काल्पनिक कोठरी से बन्द पाते है। जिनके बाहर निकलने की अकुलाहट रूपान्तरण की घबराहट आगे की अध्ययनों में दर्शित होगी।

गरीबी :– भारत की समस्याओं में निर्धनता सबसे गम्भीर समस्या है इससे सामाजिक निराशा जन्म लेती है तथा समाज में प्रायः उथल–पुथल का खतरा पैदा हो सकता है। इसलिए 'गरीबी हटाओ' सरकार का प्रमुख उद्देश्य बन गया है। भारत में करोड़ों लोगों के पास खाने के लिए रोटी पहनने के लिए वस्त्र रहने के लिए मकान नहीं है। ये लोग जीवन निर्वाह स्तर से नीचे जीते है।

वीवर के अनुसार निर्धनता एक ऐसे जीवन स्तर के रूप में परिभाषित की जा सकती है। जिसमें स्वास्थ्य और शरीर सम्बन्धित दक्षता नहीं बनी रही है।''[9]

गगोडार्ड के अनुसार निर्धनता उन वस्तुओं का अभाव अपर्याप्त पूर्ति है जो कि एक व्यक्ति तथा उसके आश्रितों को स्वस्थ्य बनाए रखने के लिए आवश्यक है''[10]

इस दृष्टिकोण से यह निष्कर्ष निकलता है कि गरीबी का तात्पर्य एक ऐसे अभावग्रस्त जीवन से है जो समाज के सामाजिक, आर्थिक, कुसमायोजन से उत्पन्न होता है। निर्धनता दूर करने के सरकारी प्रयत्न निर्धनता की समस्या को देखते हुए आज सरकार के अनेक प्रयत्नों द्वारा स्थिति में सुधार लाने का प्रयत्न कर रही है। सरकार द्वारा किये जाने वाले प्रयत्न निम्नलिखित है।

1. कृषि का विकास
2. रोजगार की सुविधाएं
3. ग्रामीण रोजगार
4. बड़े उद्योगों का विकास
5. पोषण की सुविधाएं
6. अन्त्योदय योजना
7. काम के कदले अनाज योजना
8. रोजगार आश्वासन योजना
9. राष्ट्रीय सामाजिक सहायता कार्यक्रम।

अध्ययन की समस्या – प्रस्तुत अध्ययन मुसहरों में गरीबी एवं सामाजिक निरसन : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (कुशीनगर जनपद के दो विकास खण्ड के विशेष संदर्भ में) प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र में मुसहरों में आये दिन गरीबी की [redacted] देखने में आती रहती है। आजादी के 65 साल [redacted] है। अभी भी [redacted] में इंडिया और भारत [redacted] है। इंडिया [redacted] रक्की के डगर [redacted] बढ़ाते [redacted] हैं। [redacted] से भार[redacted] लोग [redacted] बहुत [redacted] और [redacted]

[redacted] को पू[redacted] लिए मजबूर [redacted] अस्तु मुसहरों में [redacted] सामाजिक [redacted] प्रत्यात्मक [redacted] सुस्पष्ट करने [redacted] आवश्यकता है जो [redacted] का विषय [redacted]

अध्ययन का उद्देश्य : सन्दर्भित अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य है–

1. सन्दर्भित अध्ययन में मुसहर समुदाय की सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक स्थिति को ज्ञात करना।
2. सन्दर्भित अध्ययन का उद्देश्य यह भी पता लगाना होगा कि मुसहर समुदाय के लोगों के प्रति अन्य जातियों का दृष्टिकोण क्या है।
3. मुसहरों में सामाजिक परिवर्तन तथा विकास को ज्ञात करना है इसका आशय आरक्षण नीति से किस हद तक मुसहरों में परिवर्तन एवं विकास को गति मिलती है।
4. सन्दर्भित अध्ययन का उद्देश्य यह भी पता लगाना है कि मुसहर सरकारी योजनाओं से किस हद तक लाभान्वित हुए हैं।

उपकल्पना :

1. मुसहर समुदाय के लोगों की सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक स्थिति प्रायः दयनीय होती है।
2. मुसहर समुदाय के प्रति अन्य जातियों के दृष्टिकोण प्रायः उपेक्षित रहता है।
3. जैसे–जैसे बेरोजगारी एवं भूमिहीनता की कुपरिणाम सामने आ रहे हैं। वैसे–वैसे मुसहरों में गरीबी की स्थिति से सामना करना पड़ सकता है।
4. सरकारी योजनाओं का लाभ इन समुदाय को मिल रहा है, परन्तु अधिक लाभ की उम्मिद रखते है।

5. प्रायः भारतीय सामाजिक व्यवस्था में मुसहरों की स्थिति निम्न कोटि की है तथा अनुसूचित जातियों में भी इनकी परिस्थिति अत्यन्त दयनीय है।

शोध विधि :

उपकरण : चूँकि संदर्भित अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य अनुभवात्मक है। तथपि दत्तों के संकलन हेतु कुशीनगर जनपद के दो विकास खण्डों पर आधारित है, अस्तु दोनों विकास खण्डों से पाँच–पाँच गाँवों का चयन उद्देश्यपूर्ण निदर्शन प्रणाली का अनुसरण करते हुए किया गया है। दत्तो को संकलित करने के लिए एक साक्षात्कार अनुसूचित का निर्माण कर तथ्यों की गवेषणा हेतु उत्तरदाताओं से सामंजस्य स्थापित करके सीधा साक्षत्कार लिया जायेगा।

तथ्य संकलन के श्रोत : प्रस्तुत अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों स्रोतों से तथ्यों का संकलन किया जायेगा।

1. प्राथमिक श्रोत : प्रस्तुत अध्ययन में वैषयिकता लाने के लिए एक साक्षात्कार अनुसूची का निर्माण करके निर्धारित क्षेत्रों से चयनित उत्तरदाताओं से साक्षात्कार के माध्यम से प्राथमिक तथ्यों का संकलन किया जाएगा।

2. द्वैतीयक श्रोत : प्रस्तुत अध्ययन से सम्बन्धित विभिन्न प्रकार के प्रकाशित एवं अप्रकाशित शोध ग्रन्थों अभिलेखों के माध्यम से भी तथ्यों का संकलन किया जायेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्रवाल, बी0सी0 : *कास्ट रिलिजन एण्ड पावर,* श्रीराम सेन्टर फार इण्डस्ट्रियल रिलेशन, नई दिल्ली, 1977
2. अम्बेडकर बी0आर0 : *एनालसिस ऑफ कास्ट,* भारत भूषण प्रिटिंग प्रेस बाम्बे, 1980
3. वर्नदारा, ए0पी0 : *कास्ट इन चेंजिंग इण्डिया* नई दिल्ली, 1965
4. ब्रिग्स जी0डब्लू0 : *दी चर्मास,* आक्फोर्ड लन्दन, 1920
5. आहुजा सम : *सामाजिक समस्यायें,* रावत जयपुर, 2002
6. वित्ते आन्द्रे : *कास्ट क्लास एण्ड पावर,* आक्सफोर्ड बाम्बे, 1969
7. देसाई ए0आर0 : *रूरल सोसियोलॉजी इन इण्डिया,* पापुलर प्राकशन, 1978
8. दूबे एस0सी0 : *इण्डियन विलेज,* एकाइद पब्लिसर बाम्बे, 1967
9. घूरिये जी0एस0 : *कास्ट व क्लास एण्ड आकुपेशन,* पापुलर प्रकाशन, बाम्बे, 1961
10. लुईस आस्कर : *विलेज लाईफ इन नार्थ इण्डिया,* न्यूयार्क, 1998
11. मुखर्जी राधाकमल : इण्टर कास्ट चेंज
12. मजूमदार डी0एन0 : *क्लास कास्ट टेन्सीगन्स इन ए0आर0 देसाई, रूरल सोसियोलॉजी,* इन इण्डियाँ वायुकर प्रकाशन बाम्बे, 1969
13. अंसारी ए0डब्लू0 : *वी चेंजिंग विलेज इण्डिया,* चेतना पब्लिसर्स नई दिल्ली, 1980
14. जान मुमताज अली : *सिडयूल्ड कास्ट एण्ड देयर स्टेट्रस इन इण्डिया,* आयल पब्लिसिंग हाउस नई दिल्ली, 1980